सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2023 का एकादश अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'शौर्य और प्रविधि - ज्ञान के प्रतीक : अर्जुन' नामक अनुसंधानात्मक लेख में अर्जुन के चरित्र को पुरुषार्थ चतुष्टयम से पूर्ण एवं शौर्य व ज्ञान की प्रतिमूर्ति के रूप में रेखांकित किया है। मुझे विश्वास है कि पाठकजन इसे बार बार पढ़कर अर्जुन के चरित्र को नवीन दृष्टि से देखेंगे। तत्पश्चात् डॉ. विश्वावसु गौड़ एवं प्रो. वैद्य बनवारीलाल गौड़ द्वारा लिखित 'हृदयोपघात का अपवारण' लेख में महर्षि चरक के आयुर्विज्ञान को वर्तमान समय में हो रहे हृदयोपघात के कारण एवं निवारण प्रस्तुत किया है जो कि वर्तमान परिपेक्ष्य में अत्यन्त ही आवश्यक है। इसी क्रम में जय प्रकाश शर्मा द्वारा लिखित 'श्रीराम के द्वारा संत-असंत-लक्षण-विवेचन' लेख में श्रीराम के द्वारा संतो के लक्षण, सत्संग महिमा और संत-असंत के भेदों के बारे में बताया है। अन्त में स्व. डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा